No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-15

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

01734

सत्रांत परीक्षा

दिसंबर, 2011

एम.एच.डी.-15 : हिन्दी उपन्यास-2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से ***किन्हीं दो*** का सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **10x2=20**

(a) "मेरे दिल में पाकिस्तान में मारे जाने वाले और पाकिस्तान से निकाले जाने वाले अपने भाई-बहनों के लिए भी उतना ही दर्द है। मैं पाकिस्तान जाना चाहता हूँ और जाऊँगा। मैं कायदे आज़म के सामने हाथ जोड़कर दया और शांति के लिए प्रार्थना करूँगा। मैं उनसे कहूँगा कि इस कत्ल और खून को बंद करायें। हिन्दू भाई-बहनें फिर अपने घरों में लौटकर शांति से निर्भय रह सकें लेकिन उससे पहले यहाँ से गये मुसलमानों का लौट आना जरूरी है। जब तक दिल्ली और हिंदुस्तान में मुसलमानों के लिए खतरा मौजूद है, मैं किस मुँह से पाकिस्तान गवर्नमेंट पर कत्लों-खून और बदअमनी के लिए दोष लगा सकता हूँ? किस मुँह से उन्हें शांति कायम करने के लिए कह सकता हूँ! मैं हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों जगह शान्ति और अमन कायम करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा रहा हूँ।"

(b) दोस्तों-यारों दिल्ली में अपनी-अपनी प्रीतें-मोहब्बतें धारकर माई हीर को सलाम करो। हीर और रांझा दोनों हमारी इस मुजलिस में शामिल हैं। लोक आख्यान डालते हैं कि जितनी बार इस अलबेले जोड़े के प्रीति-प्यार के दुनिया में गाए जाऐंगे, उतनी बार हुस्न के महताब चमकेंगे आशिकों के दिलों में! माशूकों की आँखों में ! जितनी बार हीर के दरदीले सूर हवा में लहराएँगे उतनी बार हीर सयालों की, राँझा तख्त हज़ारे का, अपनी रूहों से इन मजलिसों में शामिल होंगे।

(c) बस, माणिक मुल्ला भी तुम्हारा ध्यान उस अथाह पानी की ओर दिला रहे हैं जहाँ मौत है, अँधेरा है, कीचड़ है, गन्दगी है। या तो दूसरा रास्ता बनाओ नहीं तो डूब जाओ लेकिन आधी इंच ऊपर जमी बरफ कुछ काम न देगी। एक ओर नये लोगों का यह रोमानी दृष्टिकोण, यह भावुकता, दूसरी ओर बुढ़ों का यह थोथा आदर्श और झूठी अवैज्ञानिक मर्यादा सिर्फ आधी इंच बरफ है, जिसने पानी की खूँखार गहराई को छिपा रखा है।

(d) हमारे इतिहास में, चाहे युद्धकाल रहा हो, या शांतिकाल, राजमहलों से लेकर खलिहानों तक गुटबंदी द्वारा 'मैं' को 'तू' और 'तू' को 'मैं' बनाने की शानदार परंपरा रही है। अंग्रेजी राज में अंग्रेजों को बाहर भगाने के झंझट में कुछ दिनों के लिए हम उसे भूल गये थे। आजादी मिलने के बाद अपनी और परंपराओं के साथ इसको भी हमने बढ़ावा दिया है। अब हम गुटबंदी को तू-तू मैं-मैं, लात-जूता साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ रहे हैं। वह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदांत को जन्म देने वाले देश की उपलब्धि है। यही संक्षेप में, गुटबन्दी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।

2. क्या 'राग दरबारी' को स्वतंत्र भारत की राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य कहा जा सकता है? अपना मत प्रस्तुत कीजिए। 10

3. माणिक मुल्ला की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए। 10

4. " 'जिन्दगीनामा' अविभाजित पंजाब की जनसंस्कृति का आख्यान है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। 10

5. " 'झूठा-सच' विभाजन की त्रासदी का महाकाव्य है।" इस कथन के संदर्भ में 'झूठा-सच' की कथावस्तु का विवेचन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : 5x2=10

(a) जयदेव पुरी का चरित्र

(b) 'जिन्दगीनामा' की भाषा का सौंदर्य

(c) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की अंतर्वस्तु

(d) 'राग-दरबारी' का कथा-शिल्प